शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-21 **VOLUME-1** IMPACT FACTOR-**SJIF-6.424,** GIF-3588,

ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर, 2020

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०

प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड-महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

''शोध-ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें।
फॉण्ट-कृति देव १० वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी।
आलेख विषयतज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी।
चयनित आलेख के लिए १०००रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा।
लेखक मौलिख शोध परख एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे।
व्हाट्स एप-९४०५३८४६७२

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

वार्षिक परामर्श मंडल (२०२०)

प्रो .डॉ.रामप्रसाद भट,हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
प्रो.डॉ.रंजित उपुल,केलनिया विश्वविद्यालय,श्रीलंका
प्रो.डॉ.रिदिमा निशादिनी लंसकारा,श्रीलंका
प्रो.डॉ.अनुषा सल्वाथुरा,श्रीलंका
प्रो.डॉ.नुर्मातोव सिराजोद्दीन, उज्बेकिस्तान
सौ.सविता तिवारी,मॉरिशस
प्रो.डॉ.मक्सीम देम्चेंको, मास्को, रशिया
प्रो.डॉ.हिदायतुल्लाह हकीमी, जलालाबाद, अफगानिस्तान

प्राचार्य डॉ.आर.एन.जाधव,पीपल्स कॉलेज,नांदेड
प्र.उपकुलपति डॉ.जोगेन्द्रसिंह बिसेन,
स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय, नांदेड
प्रो.डॉ.मुकेशकुमार मालवीय,
हिन्दू बनारस विश्वविद्यालय,बनारस
प्रो.डॉ.राजेद्र रावल,राजकोट,गुजरात
प्रो.डॉ.अरविंद शुक्ल,उत्तर प्रदेश
प्रो.डॉ.संगम वर्मा,पंजाब
प्राचार्य.डॉ.राजेन्द्र प्रसाद
राजकीय महिला महाविद्यालय, प्रतापगढ,

प्रो.डॉ मंगला रानी, पटना
प्रो.डॉ.पठाण रहीम,हैदराबाद
प्रो.डॉ.श्यामराव राठोड,तेलंगाना
प्रो.डॉ.भारत भूषण,पंजाब

अ न क्र म णि का

1.हिन्दी में प्रचलित संख्यावाचक शब्दों की व्युत्पत्ति–डॉ सिराजूद्दीन नुर्मातोव–05
2.पखतो भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–हिदायतुल्लाह हकीमी–08
3.पुष्टिमार्गीय भक्ति–काव्य में रागाभिव्यक्ति–अजय कुमार प्रजापति–12
4.प्राणायाम के प्रकार एवं लाभ–डॉ. अमरजीत यादव–16
5.कोविड–19 : शिक्षा एवं आर्थिक परिदृश्य–डॉ. अंजना अग्रवाल–20
6.देवनागरी लिपि उदगम और विकास–प्रा.डॉ. रामकृष्ण बदने–23
7.जहीर कुरेशी की गजलों में चित्रित पारिवारिक जीवन–भेंडेकर एन.एस–25
8.प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यास–डॉ.चन्दन कुमार सिंह–29
9.स्त्री अस्मिता और मीडिया–चांदणी लक्ष्मण पंचांगे–32
10.भारत में संचार साधनों का प्रभाव : एक विश्लेषण–दीपक कुमार–35
11.बदलता परिदृश्य : पर्यावरणीय संस्कृति–रामचरित मानस–डा.छाया बाजपई–38
12.राम की शक्ति पूजा काव्य में अलंकार विधान–डॉ.प्रियंका भट्ट–41
13.भारतीय जीवन बीमा निगम के दावों के निपटारे का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ.नवीन अग्रवाल–45
14.प्रेमचन्द : वैविध्य रचना दृष्टि–घनश्याम प्रसाद–49
15.सहशिक्षा एवं बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के नैतिक मूल्य,संवेगात्मक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन–कैलाश चन्द रैगर–53
16. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में चंपारण आंदोलन का महत्व–डॉ.अनामिका ब्रजवंशी–58
17. असमिया भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभुमि एवं बिहारी हिन्दी से इसकी साम्यता–डॉ.अरुण कुमार निराला–61
18.गांधी जी का खादी–दर्शन एवं स्वाबलंबन–दिलीप कुमार–65
19.चंपारण आंदोलन के सामाजिक–शैक्षणिक संदर्भ–डॉ.संतोष कुमार–69
20.आधुनिक भारत में हुए वैज्ञानिक विकास व राष्ट्रवाद के उदय का अन्तर्सम्बन्ध (19 वी सदी के मध्य)–डॉ.वेदवती–72
21.मन्नू भण्डारी के उपन्यास आपका बंटी में स्त्री पुरुष सम्बन्ध–कल्पना पंड्या–75
22.डूंगरपुर नगर परिषद् के सौन्दर्यीकरण में कृष्णकान्त गुप्ता का योगदान–नीरज भट्ट–78
23.गोविन्द मिश्र द्वारा रचित 'वह अपना चेहरा' उपन्यास में मानवीय संवेदना–ममता पाटीदार–81
24.महीपसिंह की कहानियों में सांस्कृतिक बोध–योगेश व्यास–83
25.कुतुबन रचित मृगावती में सामाजिक समरता–डॉ.संजय कुमार–86
26.बच्चन : जीवन चरित्र एवं कृतित्व–डॉ.नम्रता सिंह–89
27.भारतीय समाज में लैंगिक विषमता–डा.नीतू जायसवाल–100
28.हत्या कहानी में किसान विमर्श–डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड–95
29.आम्बेडकर के विचारों में सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता–एक अवलोकन–डॉ.प्रणव प्रशान्त–99
30.कबीर का एकेश्वरवादः हिन्दू–मुस्लिम से पृथक एक स्वतंत्र आध्यात्मिक, धार्मिक चिंतन–डा. भूरेलाल चक्रवर्ती–102

ऐसे दुष्प्रयासों को समय पर समझना चाहिएस अभी हमने राजनैतिक स्वतंत्रता ही प्राप्त की है ससांस्कृतिक स्तर पर तो हम आज भी गुलाम ही हैं। कुशल राजनीतिज्ञों का यह सिद्धांत सर्वमान्य है कि,"यदि किसी देश को गुलाम करना हो तो पहले वहां की भाषा और फिर वहां के साहित्य को गुलाम बनाओ' इससे हमे बचना चाहियेस हमारे लिपि के प्रति हमारी मानसिकता सकारात्मक होनी चाहिये। केवल इस देश में दो सौ वर्षों तक राज करके विश्व के अनेक देशों में अपना वर्चस्व स्थापित करने के कारण रोमन लिपि गुणों में तो नागरी की स्पर्धा नहीं कर सकती।नागरी तो भविष्य की उषा है।जो तारों को डूबोती है। अपने सूर्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं। आज नागरी लिपि संगणक मे आ गई है ।देवनागरी लिपि के विकास हेतु भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने कई स्तरों पर प्रयास किये है। सन १९६६ में मानक देवनागरी वर्णमाला प्रकाशित की गई और १९६७ में' हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' प्रकाशित किया गया। *ITRANS* निरूपण, देवनागरी को लैटिन(रोमन)में परिवर्तित करने का आधुनिकत्तम और अक्षत तरीका है।

आजकाल अनेक कॉम्प्यूटर प्रोग्राम ऐसे उपलब्ध है जिनकी सहायता से देवनागरी में लिखे पाठ को किसी भी भारतीय लिपि में बदला जा सकता है। ऐसे भी प्रोग्राम आ रहे है जिसके द्वारा देवनागरी में लिखे पाठ लैटिन, अरबी, चिनी, क्रिलिक, आईपीए आदि में बदला जा सकते है। युनिकोड ने भी महत्त्वपुर्ण योगदान दिया है।इस प्रकार देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास को देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

०१.देवनागरी लिपि उद्भव,विकास एवम् संभावना–ल.श्री. वाकणकर–पृ.क्र.०१
०२.भारतीय साहित्य कोश–खंड–०१–पृ.क्र.–१५२
०३. देवनागरी लिपि का संक्षिप्त परिचय (हिंदी)एच.टी.एम.एल.) हिंदी साहित्य २८ सितंबर २०१०

7.जहीर कुरेशी की गजलों में चित्रित पारिवारिक जीवन

भेंडेकर एन.एस. सहाय्यक अधिव्याख्याता
हिंदी विभाग,कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड.
तह.गंगाखेड. जि. परभणी.

भारतीय संस्कृति में परिवार को अनन्य साधारण महत्व है। परिवार में एकता, भाईचारा, अपनत्व, प्रेम, आदि का विकास होता है। यहीं भावना समाज विकास के लिए भी महत्वपूर्ण होती है। पारिवारिक एकता की भावना के संस्कार परिवार में गृहण करने के उपरांत वहीं भाव समाज जीवन में भी पनपते हुए देखे जा सकते हैं। जिस प्रकार हमारे राष्ट्र में विविधता में एकता पाई जाती है, ठिक वैसे ही परिवार में अनेक सदस्य होने क उपरांत भी उनमें एकता के दर्शन हो जाते हैं। भाईचारा, प्रेम, अपनत्व के बीज परिवार के ही उर्वरा भूमि में अंकुरित होते हैं। जो आगे चलकर समाज तथा राष्ट्र विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

साहित्य की दृष्टि से परिवार इस पहलु पर विचार किया जाए तो, अनेक साहित्यकारों ने परिवार के सुंदर चित्र अपने साहित्य में अंकित किए हैं। कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार आदि ने इस पहलु पर अपने–अपने साहित्य में समग्र रुप से प्रकाश डाला है। वर्तमान सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए रोहिताश्व अस्थाना एक स्थान पर कहते हैं कि, "आज मानव का छद्मवेशी आचरण चिंता का विषय बनता जा रहा है। आत्मविश्वास के अभाव में भय, कुंठा, संत्रास तथा हीन भावना से ग्रसित मानव के व्यवहार में कृत्रिमता की दुर्गंध अने लगी है। एक–एक मनुष्य ने कई–कई मुखैटे लगाना आरंभ कर दिया है।"1 जीम स्पष्ट है कि वर्तमान पारिवारिक जीवन में मानव का आचरण प्रभावित हुआ है। जिसके कारण व्यक्ति जीवन दिन–ब–दिन स्वार्थपरकता उभरकर आने लगी है। गजलकार जहीर कुरेशी की गजलों में भी पारिवारिक जीवन के अनके अनुकूल तथा प्रतिकूल चित्र उभरकर आए हैं। यहां पर एक बात महत्वपूर्ण यह की समय तथा समजा की दृष्टि से परिवार को देखा जाए तो समय के साथ–साथ पारिवारिक जीवन में भी अनेक स्तरों पर बदलाव हुए है। आज के युग को देखा जाए तो कल जो स्थितियाँ थी वे आज नहीं है। परिणामतः इसका परिणाम पारिवारिक जीवन पर भी देखा

जा सकता है। आज आधुनिकता के प्रभाव के कारण पारिवारिक जीवन के अनेक पहलु जैसे– रहन–सहन, खान–पान, अपनत्व का भाव, संयुक्त परिवार का अभाव, स्वत्व की भावना, सीतित परिवार, स्वतंत्र रहने की चाह आदि पहलु तथा विकृतियाँ भी उभरकर आई है। जिसकी अभिव्यक्ति जहीर कुरेशी ने समय सापेक्षता के धरातल पर अपनी गजलों में की है।

पारिवारिक स्थितियों की दृष्टि से देखा जाए तो कल और आज में अधिक अंतर आया हुआ आसानी से देखा जा सकता है। कल परिवार की आधारशिला एक मजबूत नींव पर थी, जो एकता से होकर आगे बढ़ती थी। जिसमें एक दूसरों के सुख–दूःखों का खयाल रखा जाता था। अपनी परेशानी स्वयं तक सीमित रख सारे परिवार को उसमें घसिटने की चाह नहीं दिखाई देती थी। क्योंकि खुशहाल परिवार हर किसी की चाह होता है। आज भी परिवार में कुछ ऐसे लोग पाएँ जाते हैं जो परिवार के सम्मुख अपनी विपदा नहीं रखते। वे नहीं चाहते कि उनकी वजह से सारा परिवार समस्या का सामना करे। इसी बात पर प्रकाश ड़ालते हुए गजलकार कहते हैं–"खुश और मुस्कुराते हुए परिजनों के बीच अपनी व्यथा सुनाने की हिम्मत नहीं हुई"2आज भी परिवार को महत्व देने वालों की कमी नहीं है। स्वयं के कारण सारा परिवार दुःखी हो ऐसी भावना ऐसी मानसिकता कुछ गिने–चुने लोगों में ही पाई जाती है। जिसकी अभिव्यक्ति गजलकार ने संवेदना के धरातल पर की है।

आधुनिकता का प्रभाव पारिवारिक जीवन पर भी हुआ है। जिसके चलते आज का व्यक्ति स्वतंत्र जीवन जीने का अभिलाषी बना हुआ दिखाई देता है। जिस कारण संयुक्त परिवार में आपसी मनमूटाव, संघर्ष जैसी स्थितियाँ कई बार उभरकर आती है। ऐसी स्थितियों का परिणाम यह होता है कि, सभी लोग एक ही परिवार में रहते हुए भी स्वयं को परिवार से कटा हुआ महसूस करने लगते हैं। एक ही परिवार में रहते हुए भी आपसी संवाद के अभाव में मानो वह घर नहीं मानसिक रागियों को अस्पताल ही प्रतित होता है। जिस पर गजलकार ने इस प्रकार प्रकाश डाला है–"घर की सब परछाईयाँ बीमार हैं, घर सजे हैं, अस्पतालों की तरह!"3इसी प्रकार की स्थिति 'चाँदनी का दुःख' में कुछ इस प्रकार चित्रित हुई है–"माँ, पिता, पुत्र पुत्र की पत्नी,एक ही घर रहा है किश्तों में!"4गजलकार ने वर्तमान पारिवारिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए आज के परिवार की यथार्थ स्थिति को प्रकट किया है। जिसमें पारिवारिक सदस्य एक साथ रहते हुए भी एक दूसरे के प्रति कटे हुए प्रतित होते है। जो कि पारिवारिक दृष्टि से ठिक नहीं।

हमारे राष्ट्र की बढ़ती आबदी का प्रभाव हमारे परिवार पर भी हुआ है। आज बडे आकार वाले परिवारों के स्थान पर छोटे परिवार अधिक मात्रा में पाएँ जाते हैं। दूसरा यह भी कारण उभरकर आता है कि आधुनिकता का प्रभाव तथा स्वतंत्र रहने की चाह, साथ ही अपने बच्चों को उज्वल भविष्य की दृष्टि से परिवार का सीमित होना आदि अनेक कारनों के चलते आज के परिवार छोटे–छोटे दिखाई देते हैं। गजलकार ने इसे बढ़ती आबादी तथा आज के व्यक्ति की मानसिकता की दृष्टि से निम्न प्रकार स्पष्ट किया है–"अब एक से बढ़े तो अधिकतम हुए हैं दो/इतने ही 'जन' के हाते हैं परिवार अ दक ाजकल"5

आज के परिवार 'हम दो हमारे दो या एक' की तर्ज पर अक्सर देखे जा सकते हैं। आज के पिरवारों में चार या पाँच बच्चे नहीं अपितु केवल एक या दो ही बच्चे होते हैं। इसके पिछे आज के व्यक्ति की यह मानसिकता यह कि बढ़ती हुई महँगाई में अधिक बच्चों का लालन–पालन प्राप्त आय में ठिक से नहीं हो पाता। जिस कारण आज के परिवार में केवल पती–पत्नी के साथ एक या दो बच्चों तक ही सीमित दिखाई देते हैं।

वर्तमान पारिवारिक जीवन पर आधुनिकता के परिणामों को आसानी से देखा जा सकता है। जिसके कारण आज परिवार में अपनों के प्रति भी संवेदना का अभाव दिखाई देता है। जिस पिता ने अपने खुन–पसिने को सिंच कर अपने बच्चों को इतना काबील बनाया कि वे ऊँचे पदों पर विराजमान हो गए किन्तु उनमें अपनों के प्रति ही संवेदना, प्यार, अपनत्व का अभाव आसानी से देखा जा सकता है। पद–प्रतिष्ठा के चलते पुत्र अपने ही माता–पिता को भी भूल जाते हैं। इसी बात को गजलकार ने बड़ी ही विड़म्बना के साथ निम्न प्रकार चित्रित किया है'–

"पद प्रतिष्ठा ने इतना बौराया–पुत्र अपने पिता को भूल गए!"6

आज के परिवर की परिभाषा ही पुरी तरह बदल चुकी है। माँ–बाप तथा उनकी संतान में इतना अंतर आ गया है कि प्रतिष्ठा प्राप्त बेटा अपने बुढे बाप को भूलते हुए देखा जा सकता है। बूढापे में जिसे उनका सहारा होना चाहिए वही सहारा उनको नजर अंदाज करते हुए देखा जा सकता है। पारिवारिक दृष्टि से यह बहुत ही विड़म्बना की बात है। जिसे गजलकार ने यथार्थ की धरातल पर प्रकट किया है।

वर्तमान युग तथा पारिवारिक जीवन की त्रासदियाँ अनेक रुपों में पाई जाती है। आज एक बाप के सामने सबसे बड़ी समस्या अपनी लाडली के ब्याह की होती है। वर्तमान समाज में पनपती हुई विकृतियों को देखा जाए तो आज कई युवक ऐसे है, जो अपनी रोजी–रोटी का प्रबंध भी नहीं कर पाते। दूसरी ओर अधिकांश युवक किसी न किसी व्यसनाधिनता का शिकार हुए है। ऐसे में एक बाप अपनी लाडली के लिए एक ऐसे वर की तलाश में रहता है, जो कि आत्मनिर्भर हो। यहीं वह कारण है जिसके चलते एक बाप बेटि के लिए अच्छे 'वर' की तलाश में रहता है। इसी प्रकार की स्थिति गजलकार के 'समंदर ब्याहने आया नहीं है' इस गजल संग्रह में उभरकर आई हैं–

"जो भी मिल जाता है, कहते हैं उसी से बापू
मेरी बेटी के लिए तुम भी कोई वर देखो"7

वर्तमान युग में एक पिता की मानसिकता को यथार्थ की धरातल पर प्रकट कर गजलकार इस ओर भी संकेत करते हैं कि, आज के युवकों में आत्मनिर्भरता का अभाव है।

पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहण करना परिवार के मुखिया का कर्तव्य होता है। उसका यह दायित्व होता है कि, वह अपने परिवार की सभी जरुरतों को पुरा करे। माँ–बाप अपने बच्चों के लिए यहीं करते हैं। पर आयु का एक पड़ाव जहां बच्चे परिवार को सम्हालने लायक बन जाते हैं तो बच्चों का यह दायित्व बन जाता है कि, अपने माँ–पिता की बुनियादी आवश्यकताओं को वह पुरा करे। पर आज ऐसी स्थिति नहीं पाई जाती। बार–बार बच्चों के सामने हात फैलाना यह माँ–बाप को भी अच्छा नहीं लगता। ये वे ही लोग होते हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व अपने बच्चों के लिए दिया होता हैं किन्तु अब हातों में परिवार का दायित्व न होने के कारण इनके स्वर भी बदले हुए देखे जा सकते हैं। पारिवारिक जीवन की इस बदलती तस्वीर को गजलकार इस प्रकार व्यक्त करते हैं,

"जब से बच्चों ने घर सम्हाल लिया,
हम दबे 'स्वर' के साथ रहते हैं।"8

हर माँ–बाप अपने बच्चों का अच्छा ही सोचते हैं। जब बच्चे बडे हो जाते हैं, स्वयंपूर्ण बन जाते हैं, परिवार का दायित्व सम्हालने में सक्षम बन जाते हैं तो माँ–बाप वह दायित्व उन्हें सौप देते हैं पर बदलते समय के अनुरुप उन्हें भी समझौता करना पड़ता है। अपने स्वभाव से, अपनी अधिकारिक भाषा से जिसका प्रयोग वे अपने परिवार पर करते आये थे। गजलकार ने इसी प्रकार के अनेक सुक्ष्म परिवर्तनों को पारिवारिक जीवन के माध्यम से यथार्थ तथा समय सापेक्षता के धरातल पर अभिव्यक्त किया है।

नारी की दृष्टि से पारिवारिक जीवन हो या सामाजिक जीवन हो पुरुषी वर्चस्व उस पर हावी ही रहा है। पारिवारिक जीवन में पती–पत्नी का एक दूसरों को साथ देना अती महत्वपूर्ण होता है किन्तु यहां भी उसे बंधनों के दायरे को लांघने का अधिकर नहीं। पुरुष के लिए तो वह अपने अधिकर का क्षेत्र ही होती है। आज भी पारिवारिक जीवन में पती–पत्नी के रिश्ते जिस धरातल पर पाएँ जाते हैं, उनमें पत्नी को पत्नी नहीं अपितु सेवा करने वाली सेविका के रुप में देखने वालों की कमी नहीं है। जिस पर प्रहार करते हुए गजलकार कहते हैं–

"वो पती की प्राण प्यारी तो नहीं है,
वो उसकी क्रीत–दासी दिख रही है"9

वर्तमान पारिवारिक जीवन में पती–पत्नी के रिश्ते पर प्रकाश डलते हुए जहीर कुरेशी ने स्त्री के प्रति पुरुषी मानसिकता को यहां प्रकट किया है।

आधुनिक जीवन तथा विलासिता का प्रभाव वर्तमान पारिवारिक जीवन पर भी पड़ा है। एक परिवार में पती–पत्नी के बीच दिन–ब–दिन अंतर निर्माण हो रहा है। विलासिता की प्रवृति के कारण निर्बंध पुरुष तो खुले में विचरण करता है किन्तु स्त्री उसी चार दिवारी में कैद बनकर रह जाती है। गजलकार ने परुषी

स्वैर मानसिकता पर प्रहार करते हुए उसे निम्न प्रकार अभिव्यक्त किया है–

"एक पत्नी सज रही है घर में,
वो उधर प्रेयसी के साथ रहे!"10

पती–पत्नी दोनों में सामंजस्य तथा सौहार्द की भावना हो तो ही दाम्पत्य जीवन टिक पाता है। गजलकार ने पुरुषी विलासीता की प्रवृत्ति पर प्रहार करते हुए एक स्त्री अर्थात पत्नी की मानसिकता को भी संवेदना के धरातल पर वाणी प्रदान की है। पारिवारिक जीवन में इस प्रकार की विकृतियाँ याकिनन खुशहाल जीवन में दरार ही है।

आधुनिकता के प्रभाव ने सभी में चेतना तथा जागृति निर्माण हुई है। आज की स्त्री कल की स्त्री की भाँती चार दिवारी में कैद होकर रहने वाली नहीं अपितु वह अपना अस्तित्व निर्माण करने वाली संघर्षशिल आधुनिक नारी है। वह किसी के अन्याय–अत्याचार को सहने वाली नहीं बल्कि उसका प्रतिरोध करने वाली सजग नारी है। परिवार में नारी के इस रुप पर भी गजलकार ने अत्यंत सशक्तता से अभिव्यक्ति प्रदान की है। वह खुलकर पति के सामने व्यक्त हो रही है–

"पति–पत्नी के बीच हैं, कुछ आदिम संदेह,
दोनों ने जारी किए, जले–कटे आरोप।"11

मूलतः पारिवारिक जीवन में संदेह का निर्माण होना संघर्ष का आरंभ बन जाता है। वैचारिक सामंजस्य यहां पर आवश्यक होता है अन्यथा पारिवारिक जीवन में विशेषतः पती–पत्नी के बीच में कलह निर्माण होता है। इस प्रकार की स्थिति किसी भी परिवार के हीत में नहीं होती। पारिवारिक जीवन के अंतर्गत पती–पत्नी के बीच की त्रासदी को प्रकट कर गजलकार ने वर्तमान पारिवारिक जीवन की स्थिति को यथतथ्यता के धरातल पर अभिव्यक्त किया है।

पारिवारिक जीवन में संतान सुख की प्राप्ति हर पती–पत्नी के लिए एक विलक्षण आनंद की अनुभूति की प्राप्ति होती है। किन्तु यहीं संतान अपने कार्य से, बर्ताव से परिवार के लिए मुसिबत बन जाती है, तो यकिनन पारिवारिक रिश्तों में उदासी छा जाती है। पती–पत्नी के बीच संतान को लेकर अक्सर तनाव रहता है। परवरिश को लेकर अक्सर एक–दूसरों को आरोपों के पिंजरे में खड़ा किया जाता है। पारिवारिक जीवन की इस त्रासदी को गजलकार ने निम्न प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है–

"है फूल किन्तु, नादारद है फूल से खुशबू,
हमारे बीच के रिश्ते उदास करते हैं।"12

संतान के कारन पती–पत्नी के रिश्तों में निर्माण उदासी को संतान के कर्तव्य–कर्म का परिवार पर जिस प्रकार का प्रभाव पडता है, जिसके चलते परिवार में तनाव का माहौल निर्माण होता है, रिश्तों में कडवाहट निर्माण होती हैं आदि पहलुओं को पारिवारिक जीवन दृष्टि से अभिव्यक्ति प्रदान की है।[v] ळनचज ळनचज परिवार अर्थात जहां पर माँ–बाप, पती–पत्नी, बच्चे आदि अनेक लोगों का बसेरा। जहां पर अनेक लोग एक साथ रहते हैं, वहाँ वैचारिक भिन्नता का पाया जाना स्वभाविक ही है किन्तु परिवार का संचालन कर्ता अगर सक्षम हो तो वैचारिक भिन्नता के बावजूद भी उन्हें एक साथ आगे ले जाने में सफल होता है। वर्तमान में अपवादात्मक स्थिति में इस प्रकार के परिवार भी दिखाई देते है। परिवार के मुखिया के कारन परिवार जैसा पहले था वैसे ही आगे एक साथ बढ़ने में सफल होता है। अर्थात परिवार का दायित्व जिस व्यक्ति पर है, वह अगर सक्षम हो वैचारिक प्रगल्भता से युक्त हो तो सभी को एक साथ लेकर चलने में सफल होता है। इस स्थिति को गजलकार ने प्रतीकात्म रुप से निम्न प्रकार स्पष्ट किया है–"झगड़कर भी अलग होते नहीं है, रसोई में सजे बरतन हमारे।"13

स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार रसोई घर में अनेक बर्तन होते है, ठिक उसी प्रकार परिवारा में भी अनेक सदस्य होते है। रसोई घर के बर्तन आपस में टकराने के उपरांत कई बार अलग–अलग प्राकार की आवाज निर्माण होती है किन्तु ऐसा होते हुए भी सारे बर्तन एक साथ ही रहते हैं। ठिक इसी के अनुरुप परिवार होता है। परिवार के सदस्यों के बीच वैचारिक टकराहट होती है, पर एक दूसरों को समझ कर आगे बढ़े तो सभी एक साथ मिल–जूल कर रह सकते हैं। यही भाव यहां गजलकार स्पष्ट करते हुए अपने आशावादी दृष्टिकोन को प्रकट करते हैं।

निष्कर्षः–जहीर कुरेशी की गजलों में चित्रित पारिवारिक जीवन के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि, आज पारिवारिक जीवन पर आधुनिकता का प्रभाव छाया हुआ है, जिसके चलते एक ओर विलासिता, स्वैराचार, अधिकारशाही जैसे पहलु पाये जाते हैं जो कि आधुनिक पारिवारिक जीवन में निर्माण त्रासदियों की अभिव्यक्ति करते हैं। दूसरी ओर परिवार में नारी जीवन की त्रासदी, वैचारिक भिन्नता, आपसी सामंजस्य, सौहार्द की भावना आदि के साथ गजलकार ने आशावादी दृष्टिकोन के साथ पारिवारिक जीवन की एकता को भी स्पष्ट कर वर्तमान में परिवार के महत्व का प्रतिपादन किया है।

संदर्भ–

1.हिन्दी गजलः उद्भव और विकास, रोहिताश्व अस्थाना, पृ. 176
2.जिन्दगी से बड़ा जिन्दगी का समर, जहीर कुरेशी पृ. 24
3.एक टूकड़ा घूप, जहीर कुरेशी, पृ. 25
4.चाँदनी का दुःख, जहीर कुरेशी, पृ. 67
5.रास्तों से रास्ते निकले, जहीर कुरेशी, पृ. 92
6.चाँदनी का दुःख, जहीर कुरेशी, पृ. 65
7.समंदर ब्याहने आया नहीं है, जहीर कुरेशी, पृ. 25
8.भीड़ में सबसे अलग, जहीर कुरेशी, पृ. 50
9.पेड़ तन कर भी नहीं टूटा, जहीर कुरेशी पृ. 26
10.भीड़ में सबसे अलग, जहीर कुरेशी, पृ. 110
11.दोहों से दोहा–गजलों तक, जहीर कुरेशी, पृ. 115
12.निकला न दिग्विजय को सिकंदर, जहीर कुरेशी पृ. 38
13.बोलता है बीज भी, जहीर कुरेशी, पृ. 21

8.प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यास

डॉ0 चन्दन कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग
नेशनल डिग्री कॉलेज,रामबाग, पूर्णियॉ

प्रेमचन्द निश्चय ही हिन्दी के और उर्दू के उपन्यासकार थे। प्रेमचन्द–युग में हिन्दी उपन्यास जीवन जगत के यथार्थ से जुड़ता है और भारतेन्दु–युगीन समाजिक उपन्यासों की धारा समाजिक यथार्थवादी धारा के रूप में स्थापित होती है। भारतीय उपन्यास में प्रेमचन्द की विशिष्टिता इस बात में है कि वे कल्पना के सहारे एक की अनुभूति को भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में चित्रित कर उससे अनेक निष्कर्ष निकाल लेतें है। एक उपन्यासकार के रूप में प्रेमचन्द का विकास हमें आश्वस्त करता है क्योंकि अपनी औपन्यासिक यात्रा के विकास के साथ श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर होते चले गए। ज्ञातव्य हो कि जिस प्रकार उमाशंकर जोशी के सन्दर्भ में कहा गया कि एक निशिचत भाषा में लिखतें हुए भी भारतीय साहित्यकार थें, ठीक उसी प्रकार प्रेमचन्द हिन्दी और उर्दू में लिखते हुए भी सच्चें? अर्थो में भारतीय साहित्यकार थें। भारतीय उपन्यास में उनका स्थान, उनका योगदान और उनका महत्व – इन विषयों पर विचार करने के लिए आवश्यक है कि हम भारतीय उपन्यास के स्वरुप पर पहले विचार करें और भारतीय उपन्यास पर विचार करने के लिए जरूरी है कि भारत में उपन्यास के उदय और विकास की रुपरेखा से परिचित हों। उपन्यास क्या है? उसकी व्युत्पति पर जब हम विचार करतें है तो उपन्यास शब्द – उप+न्यास के योग से बना है। 'उप' का अर्थ है–समीप, निकट और 'न्यास' का अर्थ है–धोती या धरोहर। भार्गव, आदर्श हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – "उपन्यास–(सं0पु0)– वाक्य का प्रयोग, वाक्य को आरंभ करना, प्रस्ताव, विचार, धरोहर, उपकथा, रोचक कहानी, किस्सा।" (1)

उपन्यास वह कृति है जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारी ही जीवन का प्रतिबिम्ब है और इसमें हमारी कथा हमारी ही भाषा में कही गई है। निश्चय ही